संगत समतावाद
परिचय

संगत समतावाद परिचय

संगत समतावाद (रजि०)

समता योगाश्रम

छछरौली रोड, जगाधरी – 135003

हरियाणा

श्री सद्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज

जन्म : नवम्बर 24, सन् 1903 ईस्वी
महासमाधि : फरवरी 4, सन् 1954 ईस्वी (अमृतसर)
जन्म स्थान : गंगोठियां ब्राह्मणां, तहसील कहुटा
जिला-रावलपिण्डी, (पाकिस्तान)

श्री सत्गुरूदेव महाराज जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री सत्गुरू देव महात्मा "मंगत राम जी" महाराज वर्तमान युग के जन्म सिद्ध सत्पुरूष हुए हैं। आपका जन्म 24 नवम्बर 1903 के शुभ दिन मंगलवार को ग्राम गंगोठियां ब्राह्मणा ज़िला रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में एक कुलीन कसाल ब्राह्मण वंश में हुआ। आपके पिता श्री का नाम पंडित गौरी शंकर जी और माता जी का नाम श्रीमती गणेशी देवी था। आपको तीन वर्ष की अल्पायु में ही परमात्मा की पूर्ण सूझ–बूझ थी। आप बाल्यकाल से ही सादगी, विनम्रता, कुशाग्र बुद्धि एंव भक्ति के प्रतिमूर्ति थे तथा दयालुता, धीरता, उदारता और क्षमा के प्रतीक थे।

जब आपकी उम्र तीन वर्ष की थी, आप रात्री के समय उठ कर बिस्तर पर बैठ जाते। माँ की आंख खुलती तो क्या देखती कि प्यारा मंगत बैठा हुआ है। उनके मन में ख्याल आता कि शायद बेटा डर के मारे उठ कर बैठ गया है। कहती ''मंगत क्यों बैठ गए हो? सो जाओ लाल''। आगे से उत्तर मिलता ''माँ, कुछ नहीं ऐसे ही बैठा हूँ। कोई बात नहीं माँ। यह कह कर काफी देर तक बैठे रहते (ईश्वर की याद में) और फिर सो जाते।

माँ प्रातः काल परांठे बना दिया करती कि बच्चा स्कूल में दोपहर को खा सके, किन्तू आप दूसरे निर्धन बालकों की रुखी सूखी रोटियां देखकर परांठे उन्हें दे देते और उनकी सूखी रोटियां स्वयं खाकर खुश होते।

एक दिन माँ ने अपने बेटे मंगत को अतलस का नया कोट पहना कर पाठशाला भेजा। वहाँ आपने एक सहपाठी को फटे वस्त्र पहने देखकर तुरन्त अपना कोट उतार कर उसे पहना दिया और उसका फटा पुराना कोट स्वयं पहन लिया। स्पष्ट है कि बचपन से ही आपके स्वभाव मे सादगी, बलिदान, परोपकार और दूसरों को प्रसन्न करने का कितना अधिक भाव विद्यमान था।

आप पाठ़शाला से घर लौटते हुए रास्ते में किसी एकान्त स्थान में बैठकर ईश्वर की याद में खो जाते। तेरह वर्ष की स्वल्प आयु में ही आपको आत्मसाक्षातकार हो गया। इसी दौरान समाधि अवस्था में आपको महामन्त्र 3 दिन में अवतीर्ण हुआ।

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं।।

भावार्थः–

"वह पार ब्रह्म परमेश्वर पहले भी सत्य था, अब भी सत्य है और आगे भी सत्य ही रहेगा। वह अमर तत्व आकार रहित है। वह जन्म मरण से भिन्न शक्ति है। वह परम तत्व केवल अद्वैत ब्रह्म (जिस के समान दूसरा नहीं है) ही तीन काल विद्यमान है। जो सब का आधार है तथा शरीर रूपी पुरी में आत्मा करके वास करता है, उसे पुरखा कह कर पुकारा गया है। वह सब स्थानों और घटों में समानरूप से रमा हुआ है। ऐसे कल्याणकारी परमेश्वर को नमस्कार है" ।

इसके पश्चात श्री सत्गुरू देव जी अन्तर साधना में तल्लीन रहने लगे। उनका अधिकतर समय एकान्तवास में गुज़रने लगा।

सन् 1928 में आपके प्रथम शिष्य कबीर गद्दी अहमदाबाद के महन्त श्री रतनदास जी जो कि सिद्ध महापुरूष की खोज में सम्पूर्ण भारत का दो बार भ्रमण कर चुके थे, परन्तु सिवाए निराशा और पाखण्ड वाद के कुछ नज़र नहीं आया, पुनः तीसरी बार जब रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में लई नदी के किनारे निराश बैठे मन ही मन में ये विचार कर रहे थे कि अब ये वशिष्ठ, याज्ञवलक, गौतम, कनाद, व्यास जी जैसे ऋषियों को पैदा करने वाली पवित्र भूमि सत्पुरूषों से हीन हो चुकी है और ऐसी हस्ती नज़र नहीं

आती जो अज्ञानता के अंधेरे को ज्ञान के प्रकाश से दूर कर सके। इतने में श्री सत्गुरू देव जी स्वयं उसी समय उस जगह पहुँच गये और महन्त जी की कल्पना निवृति की खातिर उनसे प्रश्न करने लगे कि प्रेमी, क्या ऋषियों, महांऋषियों को पैदा करने वाली ये पवित्र भूमि सत्पुरूषों से खाली हो चुकी है और अज्ञानता के अन्धकार को ज्ञान के प्रकाश से दूर करने वाला कोई नहीं रहा। अपने अन्दरूनी संशयों को प्रगट पाकर महन्त जी ने निगाह ऊपर उठाई तो दुबले पतले सफेद खद्दर के कपड़ों में एक हस्ती को सामने खड़ा पाया। अपने मन के प्रश्नों को हल करने के लिए पूछा कि महाराज जी,! अज्ञानता का अन्धकार कैसे दूर हो सकता है? आपने इस पर उत्तर दिया कि प्रेमी, सत् स्वरूप परमात्मा को इस देह में प्रकाशवान कर लेने से अज्ञानता का अन्धकार दूर हो जाता है। महन्त रतन दास जी के संशे की निवृति हुई और कहा कि–"परमात्मा की कृपा से मुझे पूर्ण सत्गुरू देव जी की प्राप्ति हुई और मेरे संशयों का निवारण हुआ"।

इसके पश्चात आपने आजीवन अपना समय सत् सिमरण, निष्काम सेवा और आम जनता को सदाचारी जीवन तथा सत्मार्ग बोध कराने में व्यतीत किया। समाधि अवस्था में अमरवाणी का उच्चारण सहज रूप में, जैसा विचार प्रभु आज्ञा से आता रहा, आपके परम सेवक भगत बनारसी दास जी वाणी को लिखते रहे। कई प्रसंगो में ये रब्बी वाणी लिखी गई। इन सबको एकत्र करके ग्रन्थ श्री समता प्रकाश (पद्य) का रूप दिया गया। अन्तिम पृष्ठ पर सत्गुरू देव जी ने चेतावनी दी कि किसी को इसका अक्षर, चौपाई अथवा श्लोक भंग करने की आज्ञा नहीं है। ग्रन्थ की नुमायश तथा श्रृंगार न करने का आदेश लिखकर अपने हस्ताक्षर किये।

इसके अतिरिक्त दूसरा ग्रन्थ श्री समता विलास (गद्य) में आपके पवित्र कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

ये दोनों समता–शास्त्र सदा–सदा के लिए मानव जाति का मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

आपने संगत समतावाद की नींव रखी। आपका दृष्टिकोण था कि संसार के सभी मानव–मात्र को संगत समतावाद जानें। समता को तमाम विश्व की सेवा का स्वरूप समझें। आप संसार भर की तमाम धार्मिक संस्थाओं के पथ–प्रदर्शकों का आदर करते थे और आपने फरमाया कि संगत समतावाद सब मज़हबों के रहनुमाओं की इज्ज़त करती है।

आपने सांसारिक प्राणियों को सत्शान्ति की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक उन्नति के पाँच मुख्य साधनोंः–

सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग तथा सत्सिमरण को अपने निजी जीवन में ढालने का उपदेश दिया।

आप 4 फरवरी 1954 वीरवार के दिन गुरू नगरी अमृतसर में 50 वर्ष की आयु में अपने नश्वर शरीर का त्याग करके परम सत्ता में विलीन हो गये।

आपका अन्तिम सन्देशः-

"इनका मिशन पूरा हो चुका है। वाणी प्रकट हो चुकी है। जैसा कोई रोगी होगा, अपने रोग का इलाज इन ग्रन्थों में से तलाश कर लेगा"। वह जीवन शैली जिसको धारण करके जीव अपना तथा समाज, देश और मानव मात्र का कल्याण कर सकता है–"समतावाद" का नाम दिया।

- ''समतावाद क्या है'' -

विचारशील जीव के अन्दर ऐसे प्रश्न पैदा होते हैं कि ये जीवन क्या है? ये संसार क्या है? जीवन में परिवर्तन और जन्म–मरण का चक्कर क्या अर्थ रखते हैं? जीव की मानसिक हालत क्या है और इसकी तृप्ति किस प्रकार हो सकती है? ईश्वर किसको कहते हैं, उसका स्वरूप क्या है और उसके जानने के क्या साधन हैं?

इन सभी प्रश्नों पर समय–समय पर आने वाले सत् पुरूषों ने अपने–अपने ढंग से बतलाया कि ईश्वर सत्य है, और उसे कई शब्दों से पुकारा, जैसे– अल्लाह, गाड, एक ओंकार, समता तत् आदि। सत्य को अनुभव करने के लिए जीवन की पवित्रता पर ज़ोर दिया। समय–समय पर आए सत् पुरूषों के वचन इसके प्रमाण हैं।

1. जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब मैं अपने रूप को रचता हूँ। **(योगेश्वर श्री कृष्ण)**

2. जब–जब धर्म की हानि होने लगती है और भूमण्डल पर आसुरी प्रकृति एवं अभिमानी पुरूषों की बढ़ोतरी हो जाती है, तब–तब मैं मानुष चोले में आता हूँ और सज्जनों के कष्ट और संकटों को निवारण करता हूँ। **(भगवान श्री राम)**

3. जब समता धर्म का प्रकाश लोप हो जाता है, उस वक्त फिर सत् पुरूष आकर अमली (कर्मनिष्ठ) ज़िन्दगी द्वारा प्रकाश दिखलाते हैं। **(महात्मा मंगत राम जी)**

समतावाद के लक्ष्य एवं उद्देश्य :-

1. समता बहुत प्राचीन सिद्धान्त पर खड़ी है। लेकिन जीवन में इसका पालन सदा एक नई धारा है। समता सिद्धान्त जीवन में धारण करने के लिए है, न कि वाद–विवाद में पड़ने के लिए है।

2. समतावाद हर मज़हब, पन्थ, सम्प्रदाय, जाति और देश के लोगों को समान रूप से देखता है।

3. समतावाद–कोई मज़हब, पन्थ या गिरोह नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति को साथ लेते हुए कुदरती जीवन जीने की चाह रखने वाले लोगों का सार्वभौमिक, आध्यात्मिक संगठन मात्र है। हर व्यक्ति अपना परम्परागत विश्वास या मज़हब छोड़े बिना इसमें आकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति का पूरा–पूरा लाभ उठा सकता है।

4. संगत समतावाद असली प्रेम और शान्ति प्राप्ति की संस्था है। इसकी बुनियाद सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत्–सिमरण पर खड़ी है। यह हर तरह के दिखावटी व बनावटी जीवन के विरूद्ध है।

5. सत्य के मूल–भूत सिद्धान्तों के पालन करने का हर प्रकार से प्रचार करना और हर धर्म सम्प्रदाय मत व पन्थ को समभाव से देखना।

6. संगत के सदस्यों में इस बात का प्रचार करना कि वह अपना जीवन निर्विकारी बनावें तथा दूसरों का कल्याण चाहना, अपना मुख्य कर्त्तव्य समझें।

7. भिन्न–भिन्न साम्प्रदायिक व देशीय रीति–रिवाजों के तंग दायरे से जनता को आज़ाद कराना और उनको वाद–विवाद से छुटकारा हासिल कराना तथा निष्काम भाव से सत् कर्मों में जनता का दृढ़ विश्वास बढ़ाना।

8. समभाव ही कल्याण है, समभाव ही जीव का वास्तविक स्वरूप है और परम धाम है। समभाव ही धर्म है। समभाव की प्राप्ति में यत्न करना ही गुरमुख मार्ग है।

9. शरीर और शरीर की इन्द्रिगम्य समस्त वस्तुओं को नाशवान जानना और जिस सर्व आधार–भूत शक्ति के सहारे यह शरीर तथा समस्त संसार खड़ा है, केवल मात्र वह शक्ति ही सत्य है। ऐसा दृढ़ निश्चय से मानना और इसी सत्य की अनुभूति के लिए समता के पाँच मूल–भूत सिद्धान्त **सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत्–सिमरण** पर मन–वचन और कर्म से दृढ़ रहना।

10. अहंकार ग्रसित जीव कभी भी पूर्ण शान्ति और सन्तुष्टि प्राप्त नहीं कर सकता। अहंकार ही सबसे बड़ी जड़ता और मूर्खता है, ऐसा समतावाद मानता है।

11. समतावाद–सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक सिद्धान्तों को तभी ठीक मानता है, जब तक उसका आधार आध्यात्मिक हो।

12. समतावाद–प्रेम, उदारता, सहनशीलता और मानसिक संयम पर बड़ा ज़ोर देता है और इसके लिए एक शान्तिमय आन्दोलन के लिए जनता के उत्थान हेतु सर्वदा प्रयत्नशील है।

अनमोल वचन

1. मीठे वचन बोलो, शरीर को सेवा और सत्संग में लगाओ।
2. बड़ी से बड़ी कोशिश करके सत् विश्वासी होना चाहिए।
3. तू अपने आप को ईश्वर के हवाले कर दे, तेरी फ़िकर वह आप करने वाला है।
4. हर समय क्षमा, दया, धीरज, त्याग, सत्, शील, संतोष, दीनता, परोपकार आदि महा गुणों को धारण करना चाहिए।
5. सत् पुरुषों के स्वरूप को देखकर उनका आदर्श धारण करना लाज़मी है।
6. हर घड़ी दु:ख में या सुख में ईश्वर की पूजा और उसकी आज्ञा पालन करनी चाहिए।
7. दूसरे का हक ज़हर के समान समझें।
8. ईश्वर को मानने वाले आपस मे लड़ा नहीं करते।
9. सब जीवों से प्रेम करना यह ही सत्कर्म जीव को गति देने वाला हैं।
10. जब तक अपना सही आदर्श जीवन न पेश किया जावे कैसे दुनिया का सुधार हो सकता है।
11. हर वक्त ईश्वर विश्वास और लोक सेवा को धारण करना चाहिये। यह ही परम धर्म, परम पूजा, परम योग और परम सिद्धि है।
12. सबसे बड़ी बंदगी यह है कि हर जीव के साथ अच्छे से अच्छा बर्ताव किया जाये।

13. सब सुख ईश्वर आज्ञा में जानें।

14. नेक इंसान कदम-कदम पर नेकी करता है, बुरा आदमी कदम-कदम पर बदी करता है।

15. अपने सुखों की खातिर दूसरों को दु:ख देने वाला अहंकारी जीव किसी का मित्र नहीं होता।

16. जिस पुरुष में जनता का प्रेम और सेवा हो, वह ईश्वर को मानने वाला है।

17. दीन-दु:खी अनाथों की तन, मन, धन से यथा शक्ति सेवा करो।

18. सत् कर्म ही जीव को गति देने वाले हैं।

19. वह ही गुणी पुरुष है जिसको अपने गुण का अभिमान नहीं।

20. तमाम कर्म ईश्वर अर्पण करने से कर्म अभिमान का नाश हो जाता है।

21. जब तक अपने कर्म साफ नहीं, तीर्थों का भ्रमण, देवी देवताओं का पूजन गति नहीं दे सकता।

22. हर जीव मात्र से प्रेम करना, किसी का बुरा न सोचना ही सत्य कर्म है।

23. अभिमान छोड़कर दीनता को धारण करके सत विश्वास से प्रभु के नाम का सिमरण करो।

24. ईश्वर को कर्ता-हर्ता जानकर नित सब जीवों से प्रेम करना, यह ही सत् कर्म जीव को गति देने वाले हैं।

25. जीव अच्छे कर्म करके सुख पाता है, बुरे कर्म करके दु:ख पाता है।

26. खुदा की बंदगी यही है कि किसी को मन, वचन, कर्म द्वारा दु:ख न दिया जावे।

27. मन, वचन कर्म से किसी के वास्ते बुरा न सोचना और सेवा करना ही श्रेष्ठ कर्तव्य है।

28. तुम्हारा भला दूसरे के भले में है। जिन्दगी की वृद्धि चाहते हो तो दूसरे की वृद्धि करो।

29. कपट-छल करने से माया मिल भी जाती है, मगर ऐसी एकत्र की हुई माया दु:खदाई होती है।

30. दूसरों की सेवा करने से अपने पापों का नाश होता है।

31. तन, मन, धन से सेवा करना परम धर्म कहा जाता है।

32. दान देकर प्रभु समर्पण कर दो-ईश्वर तेरी आज्ञा पूर्ण हुई।

33. सेवा उपकार में खर्च करने वाले का मन सदा खुश रहता है।

34. बिना कहे सेवा करने वाला ही गुरुमुख है।

35. शुभ कर्मों यानि सत्संग, सत् विचार, सत्, सेवा, पर-उपकार से सुख बढ़ते हैं।

36. श्रद्धा, प्रेम से निष्काम सेवा करके ही परम शान्ति मिल सकती है।

37. हर घड़ी दु:ख में या सुख में, ईश्वर की पूजा और उसकी आज्ञा पालन करनी चाहिये।

38. अपने फ़र्ज को ठीक तरह निभाना खुशी और सुख देने वाले हैं।

39. किसी को हानि या दु:ख पहुँचाने की कोशिश न करें।

40. निर्मल कर्म को धारण करके प्रभु विश्वास प्राप्त होता है।

41. कल्याण सत् पुरुषों के बचन मानने में है।

42. लोक सेवा और निर्मान भाव चित्त में धारण करें।

43. अपने स्वार्थों को त्याग कर हर समय दूसरों की भलाई चाहना।

44. अपने वचन और कर्म को सत् के आधार पर कायम करना, आचार की शुद्धि है।

45. जीवन में ही जो कुछ किया, जप, तप, सेवा, सिमरण पुन्य, दान अच्छे से अच्छा कर्म ही सहायता करने वाले हैं।

46. ईश्वर-विश्वास, ईश्वर-उपासना से जीव परम शान्ति को प्राप्त होता है।

47. हर जीव की तन, मन, वचन, कर्म से सेवा करने के वास्ते हर घड़ी तैयार रहो।

48. जब तक सत्पुरुषों के कहने के मुताबिक जीव नहीं चलता तब तक अशान्ति के जाल से छुटकारा नहीं प्राप्त होता।

49. ईश्वर विश्वासी लोग सर्तकर्मों में प्रवृत रहते हैं।

50. हर एक सेवा का कार्य बड़ी नम्रता से पूरा करना चाहिए।

महामंत्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार
अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक
कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं॥

।। मंगलाचरण ।।

नारायण पद बंदिये, ताप तपन होये दूर ।
नमो नमो नित चरन को, जो सरब आधार हज़ूर ।।

हिरदे सिमरो नाम को, नित चरनी करो दण्डौत ।
सत् शरधा से पूजिये, रख सत्गुर की ओट ।।

दुबिधा मिटे मंगल होये, जो चरन कंवल चित धार ।
रिद्ध सिद्ध आवें घर माहीं, पावें जय–जय कार ।।

साचा ठाकुर सरब समराथा, अपरम शक्ति आपार ।
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरनी बलहार ।।

सत् – मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल ।
गवन मिटी संसार की, सत्गुर मिले दयाल ।।

बार – बार करुँ बन्दना, सत्गुर चरनी माहीं ।
'मंगत' सत्गुर भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं ।

बार – बार करुँ बन्दना, सत्गुर चरनी माहीं ।
'मंगत' सत्गुर भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं ।।

सतस्वरूप चिंतवन की भावनाएं

तू कर्ता, तू हर्ता, सर्व तेरी आज्ञा, तू नित रक्षक,
तू नित सहायक, तू दीन दयाल, तू नित बखशनहार,
जो तेरी आज्ञा, तू नित पतितपावन, तू नित सर्वाधाार,
तू नित संगवासी, तू ही अविनाशी, तू ही सर्व आद,
तू ही नित अनाद, तू ही परम पिता, तू ही जगदीश्वर,
तू ही गोबिन्द, तू ही गोपाल, तू ही मंगल दाता,
तू ही अनन्त, तू ही बेअन्त, तू ही अपार, तू ही दयाल,
तू कर्ता, तू कर्ता, तू कर्ता, सर्व तेरी आज्ञा,
जो तेरी कृपा, सर्व तू ही, सर्व तू ही, सर्व तू ही,
आद अन्त मध्य तू ही, तू ही सत, तू ही अगम,
तू ही अवगत, तू ही स्वामी, तू ही अन्तरयामी,
तू ही कल्याण, तू ही जीवन, तू ही विधाता,
तू ही अन्तर, तू ही बाहिर, तू ही दीनानाथ,
तू ही ज्ञान, तू ही विज्ञान, तू ही अगोचर,
तू ही नारायण, तू ही नारायण, तू ही नारायण,

संगत समतावाद

आरती

तू पारब्रह्म परमेश्वर ⁄ तीन काल रछपाल ।
नित् पाऊं शरनागति ⁄ सत्चरन कंवल दयाल ॥
तू नित् पतत उद्धार है ⁄ पूरन प्रभ जगदीश ।
मोह माया संकट हरो ⁄ दीजो ज्ञान सन्देश ॥
नित ही तेरे चरन की ⁄ मन में रहे परीत ।
तू दाता दातार है ⁄ पुरखोत्तम सुखरीत ॥
पवन पानी बैसन्तर ⁄ धरती और आकाश ।
सब को सरजनहार तूं ⁄ आद पुरख अबनाश ॥
घट–घट व्यापक तूं परमेश्वर ⁄ सरब जीयां आधार ।
अनमत कूकर को राख लें ⁄ किरपानिध करतार ॥
काल करम जाये दूषना ⁄ खल बुद्धि हरो अज्ञान ।
सत् शरधा पाऊँ चरन की ⁄ आखण्ड प्रेम चित् ध्यान ॥
दीनानाथ दयाल तूं ⁄ पल–पल होत सहाये ।
कीरत साचे नाम की ⁄ मन तन आए समाये ॥
अन्तर का सब खेद हरो ⁄ दीजो सत्–विश्वाश ।
सरनागत हूँ मन्धमती ⁄ घट अन्तर करो परकाश ॥
अन्तरगत सिमरन करुं ⁄ निरन्तर धरुं ध्यान ।
घट–घट में दर्शन करुं ⁄ आद पुरख–भगवान ॥
तू साचा साहब सरब परकाशी ⁄ शबद रुप आखण्ड ।
गुनी मुनी उस्तत करें ⁄ तन मन पायें आनन्द ॥

होवें दयाल तूं सत् परमेश्वर , देवें धीर आपार ।
निमख–निमख सिमरन करूं, चित् चरन रहे आधार ॥
काया अन्तर परतख होवे , नाद रुप विस्माद ।
पल पल कीजूं आरती , तन मन तजूं वियाध ॥
जग आवन सुफला होवे , तेरी आज्ञा मन में ध्याऊं ।
अन्तरगत करूं आरती , भव दुस्तर तर जाऊं ॥
अन्धमत मूढ़ा नितप्रति , तेरे चरनी करे पुकार ।
'**मंगत**' मांगे दीनता , सत्–धरम सुखसार ॥
अन्धमत मूढ़ा नितप्रित , तेरे चरनी करे पुकार ।
'**मंगत**' मांगे दीनता , सत्–धरम सुखसार ॥

समता–मंगल

समता–धरम हिरदे रसे , बिख ममता होवे नाश ।
सत्–सरुप परमात्मा , जल थल पांऊ परकाश ॥
सब जीवों से प्रेम हो , तन मन सेवा धार ।
समता साधन पाए के , नित परसां जय–जय कार ॥
सत्करम सत् निश्चय , निर्मल पाऊं विचार ।
'**मंगत**' समता धार के , जीत चलो संसार ॥
सत् करम सत् निश्चय , निर्मल पाऊं विचार ।
'**मंगत**' समता धार के , जीत चलो संसार ॥

गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी की चेतावनी

जब तक तू अपने कल्याण के लिए स्वयं सोचेगा, समझेगा, मानेगा और उसी के माफिक चलेगा नहीं, तब तक साक्षात ब्रह्मा भी अगर आ जाये तो तेरा कुछ भी नहीं बन सकता।

ये शरीर अपूर्ण है, इसके भोग अपूर्ण हैं, यह संसार अपूर्ण है, इस अंपूर्ण शरीर और अपूर्ण संसार में पूर्णताई की तलाश करनी महज़ मूर्खता है। यह बात तू आज समझ ले, दस साल बाद समझ ले, या चार जन्म बाद समझ लेना, आखिर यह ही समझना पड़ेगा। क्यों अपने सफर को लम्बा करता है। उठ जाग और अपने कल्याण के मार्ग पर बढ़ चल।

सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज

संगत समतावाद द्वारा महाराज जी की शिक्षा पर आधारित ग्रंथ एवं पुस्तकें

क्रम सं0	नाम	भाषा
1.	श्री समता प्रकाश ग्रन्थ	हिन्दी
2.	श्री समता विलास ग्रन्थ	हिन्दी
3.	जीवन गाथा भाग-1	हिन्दी
4.	जीवन गाथा भाग-2	हिन्दी
5.	मेरे गुरूदेव	हिन्दी
6.	गुरूदेव ने कहा	हिन्दी
7.	ऐसे थे गुरूदेव हमारे	हिन्दी
8.	ऐसी करनी कर चलो	हिन्दी
9.	अनन्त की खोज	हिन्दी/English
10.	संस्मरण	हिन्दी
11.	समता ज्ञान दीपक	हिन्दी
12.	समता आध्यात्मिक पत्र	हिन्दी/उर्दु
13.	समता ज्ञान पुष्पमाला	हिन्दी
14.	समता निति	हिन्दी
15.	अनन्त शान्ति की ओर	हिन्दी
16.	दी रिडिएन्ट सेमनेस (The Radient Sameness)	English
17.	संक्षिप्त जीवन परिचय	हिन्दी
18.	प्रार्थना व वैराग्य वाणी	हिन्दी
19.	जीवन परिचय (समतावाद)	हिन्दी
20.	समता संदेश-मासिक पत्रिका (Monthly Magazine)	हिन्दी/English/उर्दु
21.	अमर वाणी	हिन्दी
22.	प्रकाश पुण्ज	हिन्दी
23.	महामंत्र की सीडी (CD)	हिन्दी
24.	जीवन परिचय की सीडी (DVD)	हिन्दी
25.	यादगार पल	हिन्दी
26.	आज की प्रेरणा Inspiration for the Day	हिन्दी/English

समता-साहित्य

समता-साहित्य के ग्रन्थ तथा पुस्तकें समता योग आश्रम, संगत समतावाद के सभी आश्रमों से प्राप्त की जा सकती है।

मासिक पत्रिका

समता की मासिक पत्रिका **''समता सन्देश''** हिन्दी, उर्दू और अग्रेंजी में छपती हैं।

Web Site : www.samtavad.org
Email : india@samtavad.org

जानकारी / INFORMATION

भारतवर्ष में, अन्य स्थानों पर भी संगत समतावाद के आश्रम व सत्संग शालाएँ है जिनके बारे में जानकारी निम्नलिखित आश्रमों से ली जा सकती हैं।

MORE INFORMATION REGARDING SANGAT SAMTAVAD ASHRAM AND SATSANG SHALAS IN INDIA CAN BE HAD FROM ASHRAM OFFICES

HEAD OFFICE :
SANGAT SAMTAVAD
SAMTA YOG ASHRAM
CHACHHRAULI ROAD
JAGADHARI - 135003
PH. NO. : 01732-244882

मुख्य ऑफिस:
संगत समतावाद
समता योग आश्रम
छछरौली रोड
जगाधारी-135003
फोन न0-01732-244882

DELHI OFFICE :
SAMTA YOG ASHRAM
ANSAL PALAM VIHAR
FARM Nr. - 45
VILLAGE SALAH PUR
NEW DELHI-110061
PHONE NO. 011-28061518,
011-28061519
MOBILE : 09910167755

दिल्ली ऑफिस:
समता योग आश्रम
अंसल पालम विहार
फार्म नं०-45
गाँव सलाह पुर
नई दिल्ली-110061
फोन न0- 011-28061518,
011-28061519
मोबाईल: 09910167755

For any enquiry DELHI OFFICE at above address may be contacted.
Please communicate by email at : india@samtavad.org
and Visit our website : www.samtavad.org

FOR ANY QUERY, PLEASE CONTACT :-

Sh. Rajesh Sharma (Delhi)
Mobile Nr. : 09810450205

PRINTED FROM DELHI BRANCH

SAMTA YOG ASHRAM, ANSAL PALAM VIHAR,
FARM NO. 45, VILLAGE SALAH PUR, NEW DELHI-110061
PH. NO. : 011-28061518, 011-28061519